21वीं सदी में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता

संजीव कुमार द्विवेदी*

हमारी प्राचीन काल से चली आ रही सभ्यता एवं संस्कृति नैतिक मूल्यों एवं मानवीय गुणों से परिपूर्ण थी। यहां चारों ओर मूल्यों का बोल बाला था जिसके कारण विश्व में अनोखी सभ्यता का दर्जा तथा विश्वधर्म गुरू का दर्ज मिला था। जब समस्त संसार अज्ञान्ता के अंधकार में डूबा था तब हमारे यहां उत्कृष्ट वेदों की रचना हुई थी। जो आज अनुकरणीय है। ज्ञान विज्ञानों के चेतन में सर्वकृष्ट शिखर में थे। जब संसार अशिक्षित था परन्तु जबसे हमने अपनी अध्यात्मिकता से परिपूर्ण संस्कृति के स्थान पर उपभोगवादी/भौतिकता वादी संस्कृति को अपनाया तबसे धीरे–धीरे हमारे मूल्यों में ह्रास होने के कारण आज हम इस दौर में पहुँच गये है। जहां समाज से दया, प्रेम, सहयोग, धर्म परोपकार त्याग, मानवता, भाईपास, ये शब्द मिट से गये है। समाज नैतिक पतन की ओर अग्रसर है। समाजिक मूल्यों के अभाव में समाजिक कटुता पनप रही है, पास पड़ोस से रूची हट रही है। स्वार्थपूर्ति में मानव समाज लगा हुआ है। दिखावा करने में गौरवान्वित महसूस करते है। भौतिक सुख सुविधाओं को एकत्र करने मे मानवीयता कुंठित हो रही है। जिस प्रकार शिक्षा व्यवस्था में जर्जरता, दहेज, अस्पृश्यता, नौ बहूओं को जलाने, दवा की लत, करो की चोरी, दो नम्बर धन का संग्रह, काला बाजारी, धार्मिक उन्माद, सामाजिक आर्थिक न्याय में कमी तथा राजनितिज्ञों की अदूरदर्शिता एवं हठ धर्मिता निरन्तर मानव मन को तनाव ग्रस्त कर रही है। रोजगार के लिये भीषण प्रतियोगिता है। आज संवेग तर्क पर हाबी है। जन साधारण समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार की मार से तराह रहा है। तनाव हिंसा एवं कुसमायोजन में वृद्धि होती जा रही है। दोहरे नैतिक मापदण्ड आज के जीवन के घटक बन गये है। मूल्यों पर अहम वादिता एवं स्वर्थपरता के रोगाणुओं ने आक्रमण कर दिये है। अतः 21वीं सदी में सुखद भविष्य को अंधकार मय बना दिया है। इसलिये आज वर्तमान में मूल्यों की शिक्षा अपरिहार्य है।

मूल्य शब्द का शाब्दिक अर्थ कीमत या उपयोगिता, वांछनियता, महत्व से लिया जा सकता है परन्तु मूल्यों अमूर्त सम्प्रत्य है। जिसका सम्बन्ध मनुष्य के भावात्मक पक्ष से होता है, जो उसके व्यवहार को नियंत्रीत एवं निर्देशित करता हैं। अतः मूल्य शिक्षा में हमारे समस्त मूल्य (नैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, अध्यात्मिक सभी पहलु समाहित रहते है।)

प्रो0 अर्बन ''फण्डामेन्टल ऑफ ऐथेक्सि'' मूल्य वह है जो मानव इच्छा की तृप्ति करे जो व्यक्ति तथा उसकी जाति के संरक्षण में सहायक हो। अन्त में कहते है– केवल वही परम् रूप से साध्यरूप से मूल्यवान है जो आत्माओं के विकास या आत्म साक्षत्कार की ओर ले चले''।

अतः मूल्य किसी समाज के विश्वास, आदर्श, सिद्धान्त, नैतिक, नियम ओर व्यवहार मापदण्ड जिन्हे समाज के व्यक्ति महत्व देते है और जिनसे उनका व्यवहार नियंत्रित एवं निर्देशित होता है। उस समाज के मूल्य होते है। दूसरे शब्दों में कह सकते है कि– मूल्य ऐसी संहिता या सदगुण है जिससे व्यक्ति अपनी निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपनी जीवन पद्धति का निर्माण करता है तथा अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। इसमें मानव की धाराणाएं, विचार, विश्वास, मनोवृत्ति, आस्था, आदि समाहित है। इस प्रकार धार्मिक, अध्यात्मिक, नैतिक, समाजिक गुणों का विकास होता है। जो केवल आज मूल्य शिक्षा से ही सम्भव है।

आज मूल्यों के सम्प्रत्यय में बदलाव आ गया है। प्राचीन भारतीय मूल्य समाप्त होते जा रहे है, जीवन मूल्यों में ह्रास हो रहा है। आधुनिकता के दौर में व्यक्ति अपनी संस्कृतियो, परम्पराओं एवं संस्कारो

* **बी0एड्0 (प्रवक्ता), सोनपति देवी महिला पी0जी0 कालेज, महराजगंज**

से विमुख होता जा रहा है। इसके दृष्प्रभावस्वरूप हमारे मूल्य दब से गये है। इसके बावजूद इस बात को नकारा नहीं जा सकता की मूल्यों का पतन हुआ है, नाश नहीं। आज भी भारतीय संस्कृति का बहुत महत्व है। आज भी व्यक्ति हिंसा को गलत एवं प्रेम, सहयोग, दया, परोपकार, सहिष्णुता आदि को अच्छा मानता है। बड़ो एवं स्त्रीयों का आदर करता है। अनैतिक कार्यो का विरोध करता है और नैतिक कार्यो का समर्थन। मूल्य शिक्षा की आवश्यकता निम्न कारणों से आवश्यक जान पड़ती है।

व्यक्ति के चारित्रिक विकास एवं उन्नति हेतु

महात्मा गांधी से सभी ज्ञान का उद्देश्य उत्तम चरित्र का निर्माण बताया और कहा कि– 'सच्चरित्रता के बगैर केवल बौद्धिक ज्ञान सुगन्धित शव की भांति होता है।' स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने कहा कि– 'चरित्रवान बनो, जगत अपने आप मुग्ध हो जायेगा।' इससे स्पष्ट होता है कि व्यक्ति के जीवन में चरित्र का अत्यधिक महत्व होता है। किन्तु व्यक्ति जीवन में चरित्र का अत्यधिक महत्व होते हुए भी आज इसकी स्थिति बहुत सोचनीय है। इसलिये छात्रों में चारित्रक विकास एवं उन्नति के लिये मूल्य शिक्षा की अत्यधिक आवश्यकता हो रही हैं।

व्यक्ति एवं समाज की उन्नति हेतु

व्यक्ति को नैतिक इसलिए कहा जाता है कि उसमें उचित, अनुचित, नैतिक, अनैतिक बातों को समझने की क्षमता होती है। व्यक्ति एक समाजिक प्राणी है। वह समाज में रहकर ही अपना विकास करता है। इसलिये समाज व्यक्तियों का ऐसा समूह होता है। जहां उनमें मेल जोल एवं अच्छा कार्य व्यवहार आवश्यक होता है, क्योंकि व्यक्तियों के अच्छे कार्यो से ही समाज की उन्नति होती है। जो व्यक्ति जितना अधिक समाज के साथ सामायोजित होता है, उसमें उतनी ही अधिक सहयोग सामन्जस्य, सहानुभूति की भावना होती है। इसलिये व्यक्तियों में गुण एवं समाज की उन्नति हेतु मूल्य शिक्षा आवश्यक है।

राष्ट्रीय भावना उत्पन्न करने हेतु

व्यक्ति का चरित्र उसके निजी एवं राष्ट्रीय जीवन के विभिन्न क्रियाकलापो से पता चलता है। वर्तमान समय में राजनीतिज्ञो एवं कुछ अन्य लोगो के क्रियाकलापों द्वारा देश में विभिन्न प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो रही है। इसी कारण अन्य देशों की नजरे देश में अशान्ति एंव खण्डता फैलाने पर लगी है। लोगों को जाति, धर्म, वर्ण, सम्प्रदाय, भाषा, शिक्षा एवं अन्य आधारों पर बांटकर वैनमस्यता फैलायी जा रही है। ऐसी स्थिति में व्यक्तियों के अन्दर राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न करना आवश्यक हो गया है। इसलिये व्यक्तियों ने राष्ट्रीय भावना उत्पन्न हो, इसके लिये मूल्य शिक्षा आवश्यक है।

संस्कृति के संरक्षण एवं सम्वर्द्धन हेतु

वर्तमान समय में व्यक्तियों द्वारा सभ्यता एवं संस्कृति के अन्धानुकरण से भारतीय संस्कृति का ह्रास हो रहा है। वर्तमान समय में स्थायी सुख देने वाले मूल्यों के स्थान पर शीर्षक सुख देने वाले मूल्यों को अपनाया जा रहा हैं। इसी कारण लोगो में प्रतिस्पर्धा, उदासीनता, निराशा, हताशा की भावना उत्पन्न हो रही है। इस स्थिति में भारतीय संस्कृति का मूल स्वरूप ही बदलता जा रहा है। इसलिये संस्कृति के संरक्षण एवं सम्वर्द्धन हेतु मूल्यों की शिक्षा अति आवश्यक है।

वातावरण शुद्धिकरण हेतु

व्यक्ति के विकास में वातावरण को अधिक महत्व देते हुए व्यवहार वादी मनोवैज्ञानिक वाट्सन ने कहा कि– 'मुझे नवजात शिशुओं को दे दो, मैं उसे डाक्टर, वकील, चोर या जो चाहे बना सकता हूँ।' वातावरण विभिन्न प्रकार का हो सकता है। जैसे– परिवारिक, विद्यालयी, समाजिक एवं राष्ट्रीय। आज विभिन्न परिवारों, समाजों एवं राष्ट्रो के बीच जो तनाव, संघर्ष, कलह, मारपीट आदि है का प्रभाव व्यक्ति

पर स्पष्ट रूप से पड़ रहा है। इसलिये बालक के वातवरण शुद्धिकरण हेतु मूल्य शिक्षा आति आवश्यक है।

1. मूल्यों की जानकारी एवं उसके प्रति आस्था उत्पन्न करने के लिये।
2. राष्ट्र विकास एवं सुखद भविष्य के लिए।
3. बालाको के सर्वांगीण विकास के लिये।
4. भौतिक एवं अध्यात्मिक संस्कृति में समन्वय के लिये।
5. व्यक्ति के सुखद एवं समृद्धि शाली भविष्य के लिये।

सुझाव

हमारा आचरण हमारे मूल्यों से प्रेरित होता है। मूल्यों को सभी बातों में देखना पड़ेगा, जिससे सर्वोत्म ढंग से जीवन का विकास हो मूल्य वास्तव में अच्छी वस्तुओं को चुनने की योग्यिता का सामान्य नाम कहा जात है। मूल्यों की शिक्षा हेतु –

– विद्यालयों में कार्यक्रम, शिक्षा क मूल्य अभिविन्यासित किया जाय।
– सहगामी क्रियाओं का संचालन किया जाय।
– भाषा शिक्षण में प्रेम, स्नेह, सहयोग, परोपरकार (मानवीय मूल्यों) आदि की शिक्षा प्रदान करना।
– विज्ञान में नैतिकता से परिपूर्ण विज्ञान का ज्ञान।
– समाजिक विषयों के द्वारा समाजिक मूल्यों को उचित ढंग से प्रस्तुत करके।
– जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से जागरूकता उत्पन्न करके।
– जनसंचार के साधनों के माध्यमो से अनेक मूल्यों से सम्बन्धित उपयोगी कार्यक्रम प्रस्तुत करके।
– विद्यालय प्रातःकालीन सभाओं में मूल्यों का ज्ञान, प्रेरक कहानियॉ, कवितााये, प्रसंग, प्रस्तुत करवाना।
– शिक्षक को एक आर्दश मूल्यवादी शिक्षक बनने की ओर ध्यान देना चाहिये।

आज शिक्षक के लिये नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों की परम आवश्यकता है।

निष्कर्ष

आज हमारे यहां दोनों क्षेत्रों (सामाजिक व अध्यात्मिक) में गिरावट जारी है। विज्ञान एवं तकनीकी के विस्तार के साथ विवेक संकुचित हो रहा है। ज्ञान तो निःसन्देह बढ़ रहा है परन्तु व्यक्तित्व का पतन हो रहा है। व्यक्ति आज विशेषज्ञ तो होगा परन्तु मानव नहीं। ज्ञान–विवेक में असन्तुलन से कठिनाइयॉ बढ़ गयी है। जनसंख्या विस्फोट, हिंसा का ताण्डव नृत्य, घृणा, मारकाट फैली है। वैज्ञानिक संहारक यंत्रों का निर्माण कर रहे है। अतः विज्ञान का ज्ञान निःसंदेह आवश्यक है परन्तु मूल्यों एवं नैतिकताओं का ज्ञान परम् आवश्यक है, नहीं तो मानव ही मानवता के विनाश का कारण बनेगा। अतः मूल्य शिक्षा पर ध्यान देना आवश्यक है, क्योंकि मानव मूल्य व्यक्ति के अन्तःकरण द्वारा नियंत्रित होते है और इनका परिपोषण संस्कृति एवं परम्पराओ द्वारा ही होता है। यह याद ही होगा कि विश्व में भारत ही एक मात्र अध्यात्म प्रधान संस्कृति वाला धर्म गुरू कहलाने वाला देश रहा है। अतः अपने अस्तित्व को पुनः समृद्धि एवं मूल्यों को प्राप्त करने के लिये इस वैज्ञानिक युग में भी हमें विज्ञान के ज्ञान के साथ–साथ चरित्र निर्माण के लिये मूल्यों की शिक्षा पर भी ध्यान देना होगा। क्योंकि मूल्य शिक्षा आज वैश्विक आवश्यकता है सभी जाति, पंथ सम्प्रदाय हेतु आवश्यक है। वर्तमान में विश्व में क्राईसिस ऑफ करेक्टर है। चरित्र बिना मूल्य शिक्षा के सम्भव नहीं है और इसमें शिक्षकों की अहम् भूमिका है। क्योंकि आचारण से आचार्य शब्द बना है। अतः समाज के सबसे ज्यादा बुद्धिजीवी वर्ग शिक्षकों को सामने आना होगा और क्रियान्वयन करना होगा तभी पुनः 'वसुद्यैव कुटुम्बकम्' स्थापित होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. रमन बिहारी लाल– शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, पृष्ठ सं0 – 516, 517।
2. डा0 राम शकल पाण्डेय– उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, पृष्ठसं0–757।
3. डा0 राम शकल पाण्डेय एवं करूणा शंकर मिश्र – मूल्य शिक्षा, पृष्ठ– 45, 50, 51।
4. डा0 मारोठी पवार एवं डा0 अरविन्द जोगी– मूल्य शिक्षा।
5. श्री अतुल कोठारी (सचिव, शिक्षा संस्कृति उत्थान –यास)– मूल्यों की शिक्षा।
6. दैनिक जागरण समाचार पत्र, 17 जनवरी 2016, लाहिडी गुरू जी (लेख)
7. डा0 एस0के0 पाल, लक्ष्मी नरायन गुप्त, मदन गोपाल– शिक्षा व समाज, पृष्ठ सं0 295, 305–308।